INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 9

हिंदी निबंध एवं प्रारूप लेखन

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	निबंध लेखन • शिक्षा में गुणवत्ता • विकसित भारत @2047 • आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना • राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता • आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस / कृत्रिम बुद्धिमता • सतत विकास लक्ष्य एवं समावेशी विकास • विश्व ग्राम की संकल्पना • विज्ञान • राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 • नवीनीकरणीय ऊर्जा • आधुनिकीकरण • E-marketing ई - मार्केटिंग • ई-कॉमर्स • परम्परागत खेल • उदारीकरण • संस्कृति एवं सभ्यता • योग एवं स्वास्थ्य • धर्म और आध्यात्म • भूमंडलीकरण • सुशासन • सामुदायिक जीवन • नौकरशाही • जनजातीय विकास • घरेलू हिंसा • साइबर अपराध • आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा • मादक पदार्थो का सेवन एवं दुष्प्रभाव इत्यादि	1
2.	द्वितीय निबंध	57
	समसामयिक समस्याएं एवं निदान • वैश्विक डिजिटल क्रांति • पेट्रोलियम ईंधन	

	• भारत में शहरीकरण का निर्माण • भारत में ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में समस्या • खुशहाली रिपोर्ट में भारत की स्थिति • उच्च शिक्षा में विदेशी संस्थाओं का प्रवेश • नई शिक्षा नीति का फोकस नौकरियों के निर्माण पर • आत्मनिर्भर भारत में छोटे उद्यम के लिए समस्याए • बदलते मौसम के असर से खेती पर संकट • जनसंख्या की चुनौती • G-20 में मोटे अनाज को बढ़ावा देने का बेहतरीन अवसर • भ्रष्टाचार के बदलते स्वरूप • दुनिया के लिए संकटमोचक बनता भारत • खनिज धातु लिथियम भंडार का मिलना इतना अहम क्यों • भारतीयों की थाली में क्या फिर लौट • आएंगे मोटे अनाज • स्मार्ट सिटी की परिकल्पना के क्या हैं मायने • विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश का विरोध • पर्यावरण बनाम विकास • एकजुटता ही उपाय • विकासशील देशों की आवाज बनता भारत • नया उपभोक्ता संरक्षण कानून, 2019	
3.	प्रारूप लेखन • शासकीय वा अर्द्धशासकीय पत्र, परिपत्र, प्रपत्र, विज्ञापन आदेश, पृष्ठांकन, अनुस्मारक	82
4	प्रतिवेदन • रिपोर्ट लेखन, अधिसूचना, ज्ञापन, टिप्पणी लेखन	89

अध्याय – I

निबंध लेखन

निबंध के ५ अंग होते हैं

1. **शीर्षक** : निबंध में हमेशा शीर्षक आकर्षक होना जरूरी हैं। शीर्षक पढ़ने से लोगों में उत्सुकता ज्यादा होती हैं।
2. **प्रस्तावना**: निबंध में सबसे श्रेष्ठ प्रस्तावना होती हैं, भूमिका नाम से भी इसे जाना जाता हैं । निबंध की शुरुआत में हमें किसी भी प्रकार की स्तुति , श्लोक या उदाहरण से करते हैं तो उसका अलग ही प्रभाव पड़ता हैं।
3. **विषय विस्तार** – निबंध में विषय विस्तार का सर्व प्रमुख अंश होता हैं, इसके अंदर तीन से चार अनुच्छेदों को अलग-अलग पहलुओं पर विचार प्रकट किया जा सकता हैं। निबंध लेखन में इसका संतुलन होना बहुत ही आवश्यक हैं। विषय विस्तार में निबंधकार अपने दृष्टिकोण को प्रकट करते हुए बता सकता हैं ।
4. **उप संहार** – उप संहार को निबंध में सबसे अंत में लिखा जाता हैं। पूरे निबंध में लिखी गई बातों को
5. हम एक छोटे से अनुच्छेद में बता सकते हैं। इसके अंदर हम संदेश , उपदेश , विचारों या कविता की पंक्ति के माध्यम से भी निबंध को समाप्त कर सकते हैं ।

निबंध के प्रकार

निबंध तीन प्रकार के होते हैं विषय के अनुसार

1. **वर्णनात्मक** – सजीव या निर्जीव पदार्थ के बारे में जब हम निबंध लेखन करते हैं तब उसे वर्णनात्मक निबंध कहते हैं। यह निबंध लेखन स्थान , परिस्थिति , व्यक्ति आदि के आधार पर निबंध लिखा लिखा जाता हैं ।

- **प्राणी**

1. **श्रेणी**
2. **प्राप्ति स्थान**
3. **आकार प्रकार**
4. **स्वभाव**
5. **विचित्रता**
6. **उपसंहार**

- **मनुष्य**

1. **परिचय**
2. **प्राचीन इतिहास**
3. **वंश परंपरा**
4. **भाषा और धर्म**
5. **सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन**

- **स्थान**

1. **अवस्थिति**
2. **नामकरण**
3. **इतिहास**
4. **जलवायु**
5. **शिल्प**
6. **व्यापार**
7. **जाति धर्म**
8. **दर्शनीय स्थान**
9. **उपसंहार**

2. **विवरणात्मक** – ऐतिहासिक , पौराणिक या फिर आकस्मिक घटनाओं पर जब हम निबंध लेखन लिखते हैं उसे विवरणात्मक निबंध कहते हैं । यह निबंध लेखन यात्रा , मैच , ऋतु आदि पर लिख सकते हैं।

ऐतिहासिक

1. **घटना का समय और स्थान**
2. **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**
3. **कारण और फलाफल**
4. **इष्ट अनिष्ट और मंतव्य**

- **आकस्मिक घटना**

1. **परिचय**
2. **तारीख, स्थान और कारण**
3. **विवरण और अंत**
4. **फलाफल**
5. **व्यक्ति और समाज**
6. **कैसा प्रभाव हुआ**
7. **विचारात्मक**

3. **विचारात्मक निबंध**: गुण , दोष , या धर्म आदि पर निबंध लेखन लिखा जाता हैं उसे विचारात्मक निबंध कहता हैं। या निबंध में किसी भी प्रकार की देखी गई यह सुनी गई बातों का वर्णन नहीं किया जा सकता। इसमें केवल कल्पना और चिंतन शक्ति की गई बातें लिख सकते हैं।

- अर्थ, परिभाषा, भूमिका
- सार्वजनिक या सामाजिक, स्वाभाविक, कारण
- तुलना
- हानि और लाभ
- प्रमाण
- उप संहार

निबंध लिखते समय नीचे गई बातों का ध्यान में रखें

- निबंध में विषय पर पूरा ज्ञान होना चाहिए ।
- अलग-अलग प्रकार के अनुच्छेद को एक दूसरे के साथ जुड़े होना चाहिए ।
- निबंध की भाषा सरल होनी अनिवार्य हैं
- निबंध लिखे गए विषय की जितनी हो सके उतनी जानकारी प्राप्त करें ।

- निबंध में स्वच्छता और विराम चिन्हों पर खास ध्यान दें ।
- निबंध में मुहावरों का प्रयोग होना जरूरी है।
- निबंध में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करें।
- निबंध में आरंभ में और अंत में कविता की पंक्तियों का भी उल्लेख कर सकते हैं।

शिक्षा में गुणवत्ता

सन्दर्भ :- गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा आधुनिक समाज की मांग है और चाहे कोई भी क्षेत्र हो गुणवत्ता की मांग हार जगह होती है । गुणवत्ता शिक्षा से आशय शिक्षा में गुणों का समावेश करना है, जिससे छात्रों एवं शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति भली-भांति हो सकें ।

जब किसी कार्य में उस कार्य से संबंधित सभी गुणों का समावेश होता है । तो उस कार्य की गुणवत्ता के रूप में देखा व समझा जा सकता है । और यही पहलू शिक्षा में भी होता है । हम शिक्षा में गुणवत्ता की बात जब करते हैं तो हम ऐसी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण मानेंगे जो छात्रों को उस शिक्षा का लाभ पहुँचाएँ ।

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने क लिए एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास एवं राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है ।

पृष्ठभूमि :- देश में शिक्षा में गुणवत्ता की आवश्यकता अधिक समय से महसूस की जा रही थी । गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से आशय है वह शिक्षा जो अपने निर्माण के उद्देश्यों के निर्वहन करें । गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उसी शिक्षा का समावेश होता है, जो शिक्षा शिक्षण अधिगम में छात्रों की रुचि एवं क्षमताओं को समझे एवं समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करें और छात्रों को जिविकोपार्जन योग्य बनाये ।

- 1993 में हुए यूनेस्कों सम्मेलन में शिक्षण अधिगम के 4 उद्देश्य निर्धारित किए गए जो इस प्रकार है –

बनना सीखना : (Learning to Be) :- अर्थात व्यक्तियों के व्यक्तित्व का निर्माण करना , उनके सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक , सांस्कृतिक , गुणों का विकास करना । छात्रों को इस तरह तैयार करना कि वह देश काल परिस्थितियों के अनुसार समाज के साथ समन्वय स्थापित कर सकें । छात्र अपने सामाजिक कर्तव्यों का भलि-भांति निर्वहन कर सकें ।

करना सीखना (Learning to Do) :- यूनेस्कों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ छात्रों का ज्ञानात्मक विकास करना नहीं बल्कि छात्रों के क्रियात्मक विकास पर भी बल देना है । यह छात्रों को करके सीखने को स्थायी शिक्षा मानते हैं और वहीं शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मानी जाती जाती है , जो स्थायी शिक्षा मानते हैं और वहीं शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मानी जाती है , जो स्थायी हो और जिसका प्रयोग छात्र जरुरत पड़ने पर कर सकें।

जानना सीखना (Learning to Know) :- इसका अर्थ है ज्ञान को जानना अर्थात् जो ज्ञान छात्र प्राप्त करते हैं उन्हें उस ज्ञान के बारे में पता होना चाहिए कि उसका उपयोग कब और कैसे करना है । यह सच भी है । किसी शिक्षा को हम गुणवत्तापूर्ण तभी कह सकते हैं , जब वह शिक्षा छात्र को कुछ भी जानने में उसका सहयोग करें ।

एक साथ रहना सीखना (Learning to live Together) :- हम उसी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कह सकते हैं जो शिक्षा व्यक्तियों को समाज में एक साथ रहना सिखाती है । जो शिक्षा समाज के समस्त कार्यों में सहयोग कर रहना सिखाती हो उसी शिक्षा को गुणवत्ता परख शिक्षा कहा जा सकता है ।

शिक्षा प्रणाली के आधारभूत सिद्धांत :- शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य उत्तम मस्तिष्क का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा , सहानुभूति , साहस एवं लचीलापन , वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति , नैतिक मूल्य और आधार हो । इसका उद्देश्य ऐसे प्रतिभाशाली लोगों को तैयार करना है जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित समावेशी बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करें ।

अभी हाल ही में देश में नई शिक्षा नीति की आवश्यकता अधिक थी अब तक तीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लाया गया है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 , 1986 तथा 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति , 1986 को वर्ष 1992 में संशोधित किया गया था । शिक्षा पर पिछली नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा तक पहुँच के मुद्दों पर था ।

नई शिक्षा नीति को विगत शिक्षा नीति की कमियों को दूर करने तथा वर्तमान भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लाया गया है । जिससे स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रुपान्तकारी सुधार के मार्ग प्रशस्त हो गए हैं । उल्लेखनीय है कि नीति के निर्माण के लिए जून 2017 में पूर्व इसरो प्रमुख डॉ. के कस्तूरीरंजन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था । इस समिति ने मई 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा प्रस्तुत किया था ।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के निर्धारण तत्व :-

पाठ्यक्रम :- पाठ्यक्रम शिक्षा में गुणवत्ता लाने का प्रमुख कारक माना जाता है । समस्त विद्यालय एवं शिक्षा का संचालन पाठ्यक्रम द्वारा ही होता है । इसलिए शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए जरूरी है कि पाठ्यक्रम का निर्माण छात्रों के स्तर के अनुसार एवं समाज की आवश्यकता का अनुसार किया जाए ।

पर्यावरण :- शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए जरुरी है कि शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण भौतिक , सामाजिक , आर्थिक , सांस्कृतिक पर्यावरण के आधार पर किया जाए । सीखने के लिए उचित पर्यावरण का होना बहुत आवश्यक है , और

उसके लिए छात्रों के आस-पास का वातावरण अधिगम एवं शिक्षा के लिए अनुकूल बनाने अति आवश्यक है।

शिक्षक :- शिक्षक समाज के नागरिकों को तैयार करता है इन सभी शिक्षा के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व एक शिक्षक का होता है। शिक्षक की भूमिका शिक्षा में सबसे अहम मानी जाती है, क्योंकि एक शिक्षक ही होता है जो ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरण करता है शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करने का कार्य एक शिक्षक ही कर सकता है।

छात्र :- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकास तभी संभव है जब छात्रों के व्यक्तित्व में भी गुणवत्ता का समावेश हो। छात्रों में अगर सीखने की जिज्ञासा हो एवं उनका चरित्र अध्ययनशील हो तो गुणवत्ता में वृद्धि निश्चित है।

संस्थागत समस्या है एक बड़ा कारण :- शिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत, वित्तीय एवं प्रशासनिक उपायों के द्वारा राज्यों एवं केन्द्र सरकार के बीच नई जिम्मेदारियों को बाँटने की आवश्यकता महसूस की गई। जहाँ एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में राज्यों की भूमिका एवं उनके दायित्व में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ, वहीं केन्द्र सरकार ने शिक्षा, शिक्षा के राष्ट्रीय एवं एकीकृत स्वरूप को सुदृढ़ करने का भार भी स्वीकार किया। इसके अंतर्गत सभी स्तरों पर शिक्षकों की योग्यता एवं स्तर को बनाए रखना एवं देश की शैक्षिक जरूरतों का आंकलन एवं रख-रखाव शामिल है शिक्षा अब समवर्ती सूची का विषय है जिसके अंतर्गत केन्द्र और राज्य मिलकर काम करते है।

प्रमुख समस्याएँ :-

- हमारे देश का शिक्षा क्षेत्र शिक्षकों की कमी से सर्वाधिक प्रभावित है UGC के अनुसार कुल स्वीकृत शिक्षण पदों में से 35% प्रोफेसर के पद, 46% एसोसिएट प्रोफेसर के पद और 26% सहायक प्रोफेसर के पद रिक्त है।
- सरकारें भी शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए निरंतर प्रयास करती रहती है। लेकिन इसमें भी राज्यों द्वारा चलाए जाने वाले शिक्षा सुधार कार्यक्रमों के असफल हो जाने का जोखिम रहता है, क्योंकि वे परिवर्तन करते समय रोडमैप का अनुसरण नहीं करते और नीतियाँ बनाते समय सभी हितधारकों को भी ध्यान में नहीं रखा जाता है।
- भारत में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता एक बहुत बड़ी चुनौती है। टॉप -200 विश्व रैंकिंग में बहुत कम भारतीय शिक्षण संस्थानों को जगह मिल जाती है।

माध्यमिक शिक्षा का सशक्तीकरण :- शिक्षा की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा का बहुत महत्व है, क्योंकि इससे छात्र उच्च शिक्षा के लिए और दुनिया में कार्य करने के लिए तैयार होते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण और वैश्वीकरण विज्ञान और प्रौद्योगिकी में तेजी से हुए परिवर्तन तथा जीवन-स्तर को बेहतर बनाने और गरीबी को कम करने की आवश्यकता के मद्देनजर यह जरुरी है, कि प्रारंभिक शिक्षा के आठ वर्षों की अवधि के मुकाबले स्कूली शिक्षा पूरी करने वाले विद्यार्थियों को ज्ञान और कौशल में ऊँचा स्तर प्राप्त हो।

"शिक्षा भविष्य का पासपोर्ट है ; कल के लिए जो आज इसकी तैयारी करते है"

माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण :- इसके लिए माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण की केन्द्र प्रात्योजित योजना में विभिन्न शिक्षा अवसर उपलब्ध कराने की व्यवस्था है, ताकि लोगों की रोजगार क्षमता को बढ़ाया जा सके। और कुशल जनशक्ति की माँग और आपूर्ति के बीच के अंतर को कम किया जा सके। यह योजना उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए विकल्प उपलब्ध कराती है। यह योजना 1988 में लागू की गई थी। जिसमें 2011 में सुधार किए गए। संशोधित योजना का उद्देश्य देश में व्यावसायिक शिक्षा की मान्यता को बढ़ाना योजना बनाने और उसे लागू करने में उद्योगों के साथ तालमेल रखना, अनुपयुक्त पाठ्यक्रमों तथा व्यावसायिक शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी की समस्या पर ध्यान देना था साथ ही माध्यमिक स्तर व्यावसायिक शिक्षा के सशक्तिकरण से 2022 तक 50 करोड़ कुशल कर्मियों के राष्ट्रीय लक्ष्य को पूरा करने में मदद मिलेगी "ज्ञान में एक निवेश सबसे अच्छा ब्याज देता है।

स्कूली शिक्षा के लिए समग्र शिक्षा योजना :-

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने स्कूली शिक्षा को स्कूल पूर्व प्राइमरी अपर प्राइमरी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों में बाँटा है ताकि इसकी निरंतरता लगातार बनी रह सके। योजना का उद्देश्य अंग्रेजी के T से बने शब्द टीचर्स और टेक्नोलॉजी का एकीकरण करके सभी स्तरों पर गुणवत्ता में सुधार लाना है। यह योजना विभिन्न स्तरों की शिक्षा को बांटे बिना स्कूली शिक्षा शिक्षा को समग्र दृष्टि से देखती है। यह योजना ग्रेड के अनुसार विषय अनुसार शिक्षा प्राप्ति के परिणामों पर आधारित है।

क्या किया जा सकता है :-

शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने के कई कारक हैं। देश के शिक्षा संबंधी सभी अध्ययन और सर्वेक्षण इंगित करते हैं कि शिक्षा के साथ विद्यार्थियों का स्तर भी अपेक्षा से नीचे है। इसके लिए सीधे शिक्षकों को दोषी ठहरा दिया जाता है। और इस वास्तविकता से आँखे मूँद ली जाती है कि विद्यालयों / महाविद्यालयों का बुनियादी ढाँचा और शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था बेहद कमजोर है। देश में एक लाख से अधिक विद्यालय ऐसे है, जहाँ केवल शिक्षक है। आजादी के 75 साल बाद भी देश में शिक्षा की यह दशा और दिशा है तो स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के सकारात्मक अभियान में सभी का सक्रिय सहयोग लेना आवश्यक होगा। इस अभियान में सरकार, नागरिक समाज संगठन, विशेषज्ञों, माता-पिता, सामुदायिक सदस्यों और बच्चों सभी के प्रयासों की आवश्यकता होगी।

निरंतरता को अत्यंत प्रभावित कर सकते हैं और यह अधिक ध्यान देने योग्य है।

- भारत ने मार्च 2019 में 'शक्ति' प्रक्षेपास्त्र का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है। इसके बाद वह अमेरिका, रूस और चीन के बाद चौथा ऐसा देश हो गया है, जिसके पास अंतरिक्ष की निचली कक्षा (एलओए) में घूम रहे किसी उपग्रह को मार गिराने की क्षमता है।

मादक पदार्थों का सेवन एवं दुष्प्रभाव

संदर्भ :-आज हमारा समाज बहुत व्यस्तता के कारण एक अजनबी दौर से गुजर रहा है। माता-पिता अपने-अपने व्यवसाय में इतने व्यस्त हैं कि जो समय अपने बच्चों को देना चाहिए वह नहीं दे पा रहे हैं। इससे हमारी नौजवान पीढ़ी मानसिक तनाव एवम् सही मार्गदर्शन के अभाव से मुख्य लक्ष्य से भटक रही है और क्षणिक आनन्द प्राप्ति के लिए मादक पदार्थों की तरफ आकर्षित हो रही है। यह एक सामाजिक विडम्बना है।

मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले दुष्परिणामों से युवा वर्ग को अवगत करवाना ताकि यह इस बुराई में लिप्त न हो। खाली दिमाग शैतान का घर होता है। इसलिए युवा वर्ग को अपने खाली समय का सदुपयोग सृजनात्मक व रचनात्मक कार्य करने में करना चाहिए। ताकि वह बुरी संगति में न पड़कर अपने अन्दर छिपी कला में निखार ला सके। और समाज के अच्छे नागरिक बन सके। अगर अब भी हम इसके प्रति सजग न हुये तो ये हमारी भावी युवा पीढ़ी को नष्ट कर देगी। पाश्चात्यीकरण का अनुसरण करते हुए व मीडिया के दबाव के प्रभाव से किशोर-किशोरियों पर तनाव, दबाव एवम् माता-पिता द्वारा आपेक्षित सफलता न मिलने पर नकारात्मक रवैया अपनाने पर वे मादक पदार्थों के संरक्षण में जाते हैं। यह मादक पदार्थ किशोरों के सम्पूर्ण विकास में बाधक हैं। ये मादक पदार्थ उसको अन्धेरों की तरफ ले जाते हैं। आज हमारे अध्यापकों, माता-पिता एवम् समाज के बुद्धिजीवियों का नैतिक कर्तव्य बनता है कि हम उनको इसके दुष्परिणामों से अवगत करवाते हुए उनकी लक्ष्य प्राप्ति में किशोरों का मार्गदर्शन करें।

यूं तो पूरे विश्व में मादक पदार्थों के सेवन से किशोर वर्ग जूझ रहा है, हमारा देश भी इससे अछूता नहीं है। यह पूरे विश्व की गम्भीर समस्या है। जिसका प्रभाव भारत जैसे आदर्श देश पर भी अत्यधिक मात्रा में पड़ा है। आज की युवा पीढ़ी मादक पदार्थों के सेवन अपने लक्ष्य को भूल रही है और वह अपने जीवन को बर्बाद करके अपने माता-पिता को भी दुःख दे रही है। मादक पदार्थों के सेवन से किशोर माता-पिता की आशाओं के विपरीत निकलने से स्वयं को उपहास का पात्र तो बनाते ही हैं, लेकिन परिवार को भी तनाव ग्रसित करते हैं। आज किशोरों को मादक पदार्थों के सेवन के प्रति रुझान के अनेकों कारण हैं। जिन्हें दूर करने के लिए आज समाज के सभी समुदायों का कर्तव्य बनता है कि इस बुराई को जड़ से निकालने के लिए किशोरों के इन मादक पदार्थों के प्रति रुझान को खत्म करके समाज में एक अच्छा नागरिक बनाने में सम्पूर्ण मदद करने की कोशिश करें।

मादक पदार्थ के नाम

मादक पदार्थ कई तरह के होते हैं, जैसे- शराब, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, खैनी, गुटका, अफीम, चरस, सुलफा, कोकीन, हेरोइन, भांग, गांजा, इत्यादि। इसके अलावा ब्राउन शूगर जैसे कई ऐसे मादक पदार्थ हैं जो कि शरीर को क्षीण करते हैं।

मादक पदार्थ क्या होते हैं-

मादक पदार्थ का संक्षिप्त अर्थ है, मादकता उत्पन्न करना। अर्थात् क्षणिक सुख या खुशी के बाद पूरे जीवन को विनाशकारी बनाना, जो कि किशोरावस्था में अत्यन्त प्रबल मात्रा में स्वयं लेकर किशोर अपने जीवन को दुःखदायी बनाते हैं। ऐसा नहीं है कि इन मादक पदार्थों के सेवन से किशोर वर्ग बच नहीं सकते हैं लेकिन इसका सीधा व सरल उपाय है कि स्वयं उन्हें इन आदतों में पड़ने से बचना चाहिए। प्रायः देखने में आता है कि अधिकांश किशोर कुसंगति में पड़कर मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। जिसके लिए किशोरों को आत्म नियन्त्रण रखना पड़ता है। और सही मित्रों का चुनाव स्वयं ही करना होता है। क्योंकि मादक पदार्थों के प्रति रुचि पैदा करने वाले भी अधिकांश किशोर मित्र ही होते हैं। यदि किशोरों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना हो तो वे अवश्य सही राह चुनें। बुरी संगत से बचें, अपने ऊपर नियन्त्रण रखें, माता-पिता या शिक्षकों का पूरा सहयोग लें। यदि किशोर ऐसा करने में सक्षम हैं तो वह निश्चय ही अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अपने जीवन को सफल बनाकर माता-पिता व परिवार तथा समाज में एक अच्छी पहचान बना सकता है। तथा परिवार व अपने देश का नाम उज्वल कर देश को उन्नति के रास्ते पर ले जा सकता है। मनुष्य प्राचीन काल से ही नशीली वस्तुओं का प्रयोग करता आ रहा है। उसका विश्वास था कि इनके प्रयोग से रोग दूर हो जाते हैं व वह तरो ताज़ा हो जाता है। पर वह इसके कुप्रभाव से अनभिज्ञ है।

मादक पदार्थ (द्रव्य) क्या हैं-

मादक पदार्थ एक ऐसा रासायनिक पदार्थ है जो चिकित्सक की सलाह के बिना मात्रा शारीरिक एवम् मानसिक कार्य प्रणाली बदलने हेतु अपने आप ही लिया जाता है। जो अस्थायी तौर पर कुछ समय के लिए तनावमुक्त, हल्का व आनन्दित कर देता है।

1. **अल्पवधि प्रभाव:** कुछ मादक पदार्थों के सेवन से उनके प्रभाव उसी समय प्रकट हो जाते हैं। इससे लेने वाला तनाव मुक्त व प्रफुल्लित महसूस करता है।
2. **दीर्घकालीन प्रभाव :** मादक पदार्थों के दीर्घकालीन प्रयोग से शारीरिक एवम् मानसिक तौर पर भी रोगग्रस्त हो सकते हैं।

चिकित्सा संबंधी दवाएँ भी मादक हो सकती हैं अगरः-

1. **अत्यधिक प्रयोग** : चिकित्सक की सलाह लिए बिना दवाई की मात्रा अगर बढ़ा दी जाए तो वह मादक रूप ले लेती है।
2. **अक्सर प्रयोग** : चिकित्सक की सलाह के बावजूद कोई दवा अगर लम्बे समय तक बार-बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में भी ली जाए तो यह दवा भी मादक हो सकती है। इसे द्रव्य निर्भरता (Drug Dependency) भी कहते हैं।
3. **गलत प्रयोग** : कई बार जब कोई दवा बिना बीमारी या बिना चिकित्सक की सलाह से ली जाए तो वह भी मादक बन जाती है।
4. **गलत संयोग** : अगर किसी दवा को बिना चिकित्सक की सलाह के किसी अन्य दवा के साथ मिलाकर ली जाए तो वह घातक सि" हो सकती है। इसके अलावा शराब, गुटका, खैनी, गांजा, भांग, चरस, अफीम, सुलफा, तम्बाकू, सिगरेट , बीड़ी, सिगार, हुक्का, कोकीन, ब्राउन शूगर, हेरोइन, यहां तक कि ज्यादा मात्रा में चाय या कॉफी भी मादक होती हैं। तथा नशीले पदार्थ हैं। इनके सेवन से व्यक्ति के अन्दर अलग-अलग प्रकार के विकार एवम् दुष्प्रभाव दिखते हैं।

युवा वर्ग का मादक द्रव्यों के प्रति आकर्षण के कारणः

युवा वर्ग का मादक द्रव्यों के प्रति आकर्षण के विभिन्न कारण हैं जो कि पारिवारिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक भी हो सकता है। हमने यहां पर किन्हीं कारणों का उल्लेख किया है। इनको पढ़कर किशोर वर्ग को अगर कभी जिन्दगी में ऐसी परिस्थितियों से गुजरना पड़े तो मादक द्रव्यों का सेवन न करके उससे बचना चाहिए।

1. **उत्सुकता वश** : कई बार किशोर परिवार में मादक द्रव्यों का सेवन करते हुए अपने पिता या बड़े बुजुर्गों एवम् कुछ क्षेत्रों में माताओं को भी देखते हैं। तब भी उनमें उत्सुकता होती है कि इसका सेवन करके देखें कि कैसा अनुभव होता है। क्योंकि वह अपने माता-पिता को अपना आदर्श मानते हैं और सोचते हैं कि अगर वे ले सकते हैं तो हमारे लेने में क्या बुराई है? लेकिन वह इसके दुष्परिणामों से अनभिज्ञ रहते हैं।
2. **मित्रों वर्गों के सम्पर्क में आने सेः-** अपने सहपाठियों व हम उमर के दबाव में आकर भी वह मादक पदार्थों का सेवन करता है। कई बार उसके लाख मना करने पर भी उसके मित्र उसके जबरदस्ती लेने पर मजबूर कर देते हैं। वे कहते हैं कि कभी-कभी लेने से कुछ नहीं होता। परन्तु नशा है खराब। वह बार-बार लेने पर मजबूर हो जाता है, व नशे की लत में पड़ जाता है।
3. **स्वच्छन्दता** : कुछ किशोर-किशोरियां छात्रावास एवम् शहरों में अकेले अपने माता-पिता व परिजनों की निगाह से दूर अपने आप को स्वच्छन्द महसूस करते हैं। तथा वे नशे की आदत में पड़ जाते हैं।
4. **पारिवारिक वातावरण** : जब परिवार में माता-पिता की व्यस्तता अधिक हो तथा बच्चों को ज्यादा ध्यान न दे पाएं तो भी किशोर इस नशे की आदत में पड़ जाते हैं। वह अपने आप को अकेला और माता-पिता के प्यार से वंचित समझकर इस ओर मुड़ता है। वह सोचता है कि शायद उसकी परिवार में कोई जरूरत नहीं है। कभी-कभी माता-पिता के परस्पर तनाव पूर्ण आपसी संबंध व उनकी कलह या उच्च सोसाइटी में शादी का अधिक मात्रा में टूटना भी बच्चों को मादक पदार्थों के सेवन के लिए प्रेरित करता है। बच्चों में हीन भावना व असुरक्षा की भावना आ जाती है वे सोचते हैं कि उनके माता-पिता औरों की तरह एक साथ प्यार से क्यों नहीं रहते। पर बच्चों के मस्तिष्क परिपक्व न होने के कारण वे यह समझ नहीं सकते कि माता-पिता का व्यवसाय के लिए घर से बाहर अधिक समय तक रहना आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए जरूरी है।

मादक पदार्थों का शरीर पर क्या प्रभाव होता है अथवा मादक द्रव्यों के प्रभावः

स्वास्थ्य पर धूम्रपान के प्रभाव : आधुनिक समाज में सिगरेट पीना या धूम्रपान सभ्यता का प्रतीक समझा जाता है। परन्तु हम सिगरेट की प्रत्येक डिब्बिया पर लिखी हुई चेतावनी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ("Cigarette smoking is injurious to health") की ओर ध्यान नहीं देते और सिगरेट पीने से बाज़ नहीं आते। इससे हमारे शरीर में कई प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं। तम्बाकू का निरन्तर सेवन करने से मनुष्य के शरीर में रोगों का प्रतिरोध करने की शक्ति क्षीण हो जाती है। अधिक सिगरेट पीने से मनुष्य की आयु प्रति सिगरेट 11.5 मिनट कम हो जाती है।

तम्बाकू में निकोटिन नामक विषैला रासायनिक तत्व पाया जाता है जब रासायनिक पदार्थ सिगरेट , बीड़ी आदि के धुंए के साथ मिलकर मनुष्य के मुंह, नाक तथा फेफड़ों द्वारा सोख लिया जाता है तब उसे अनुभव होता है कि उसे आराम मिल रहा है परन्तु जब इसका प्रभाव समाप्त हो जाता है तो मनुष्य को सिगरेट पीने की ललक महसूस होती है। इस प्रकार मनुष्य की सिगरेट पीने की क्षमता बढ़ती ही जाती है। धूम्रपान एक व्यसन है जो मनुष्य के शरीर की सभी प्रणालियां विकृत कर देता है।

1. धूम्रपान के फलस्वरूप मनुष्य का पाचन तंत्र (Digestive System) बिगड़ जाता है। तथा रक्त चाप (Blood Pressure) में उतार-चढ़ाव होने लगता है। सिगरेट पीने वालों को हृदय रोग, श्वास रोग, नाक एवं गले के रोग होने की सम्भावना अधिक रहती है। अधिक सिगरेट पीने से कैंसर की बीमारी होने का भय भी बना रहता है।
2. सिगरेट पीने की आदत से छूटकारा पाने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए। दूसरे हरी सब्जियों और फलों का अधिक से अधिक सेवन करना चाहिए।

अध्याय – ५

प्रतिवेदन

जब किसी कर्मचारी अथवा अधिकारी का प्राप्य किसी दूसरे कर्मचारी अथवा अधिकारी को मिल जाता हैं, तब न्यायोचित माँग के लिए सम्बन्धित अधिकारी के पास वस्तुस्थिति का पूर्ण विवरण देने वाला आवेदन-पत्र दिया जाता हैं। ऐसा आवेदन पत्र 'प्रत्यावेदन' (Representation) कहलाता हैं । नौकरी करते समय जीवन में प्रायः ऐसी स्थिति आती हैं जब किसी कर्मचारी पर निराधार दोषारोपण किया जाता हैं अथवा किसी वरिष्ठ कर्मचारी या अधिकारी की उपेक्षा कर कनिष्ठ कर्मचारी या अधिकारी की प्रोन्नति कर दी जाती हैं । कभी-कभी निर्दोष होने पर भी न्यायालय से अथवा सम्बद्ध विभाग से दण्ड की घोषणा हो जाती हैं जिसके विरुद्ध आवाज उठाने की जरूरत पड़ती हैं । इन सबके लिए वस्तुस्थिति का सांगोपांग विवरण देने वाला जो आवेदन-पत्र सम्बन्धित उच्च अधिकारी को दिया जाता हैं उसे 'प्रत्यावेदन' कहते हैं । उदाहरणार्थ यदि हम किसी राजकीय कॉलेज में हिन्दी के वरिष्ठ लेक्चरर हैं और विभागाध्यक्ष के पद पर किसी कनिष्ठ लेक्चरर की प्रोन्नति कर दी जाए, तो हम अपना प्रत्यावेदन निम्नांकित रूप में प्रस्तुत करेंगे ।

सेवा में,

शिक्षा निदेशक (उच्च शिक्षा),
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

द्वारा,

प्राचार्य,
राजकीय महाविद्यालय,
रानीखेत (अल्मोड़ा)

विषयः- हिन्दी विभाग में विभागाध्यक्ष की नियुक्ति में असंगति के सम्बन्ध में।

महोदय,

(1)मैं विगत १ वर्षों से राजकीय महाविद्यालय, रानीखेत (उत्तर प्रदेशीय सरकार से शासित) में हिन्दी विभाग के लेक्चरर पद पर लगातार कार्य करता आ रहा हूँ । निदेशालय की यह नीति रही है कि वरिष्ठता सूची में जिसका नाम शीर्ष पर रहता हैं, प्रोन्नति का अवसर आने पर सर्वप्रथम उसे ही प्रोन्नत किया जाता हैं ।

(2)प्रदेश में जितने भी राजकीय कॉलेज हैं, उनके हिन्दी विभागों के सभी लेक्चररों में मेरा नाम वरिष्ठताक्रम में शीर्ष पर हैं । जब प्रोन्नति का अवसर आया, तब मेरी उपेक्षा कर दी गयी और मेरे तीन दिन बाद कार्यभार ग्रहण करने वाले डॉ. भीम सिंह, लेक्चरर, राजकीय कॉलेज, चन्दौली को प्रस्तुत कॉलेज का हिन्दी विभागाध्यक्ष नियुक्त कर दिया गया हैं । इस प्रकार के निर्णय से निदेशालय की गरिमामयी परम्परा की अवमानना होती हैं ।

(3) विनम्र निवेदन हैं कि वरिष्ठता सूची का पुनः अवलोकन करने की कृपा करें तथा न्यायोचित कार्रवाई कर मुझे अनुगृहीत करें ।

भवदीय सीताराम प्रसाद

23 जनवरी, 1977 ई.
लेक्चरर, हिन्दी विभाग,
राजकीय कॉलेज, रानीखेत

(५) सम्पादक के नाम पत्र

'सम्पादक के नाम पत्र' में पाठक या लेखक अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हैं । किसी घटना, सामाजिक समस्या, पत्र-पत्रिका में प्रकाशित सूचना, लेख आदि के बारे में पाठकों या किसी व्यक्ति द्वारा प्रतिक्रिया - स्वरूप सम्पादक के नाम लिखे गये पत्र को 'सम्पादक के नाम पत्र' कहते हैं । इसमें 'पत्रकला' के साथ-साथ '' 'निबन्धकला' की भी परीक्षा हो जाती हैं । इसी कारण इसे 'निबन्धात्मक पत्र' भी कह सकते हैं । इसके लिए निम्नांकित बातें ध्यान में रखनी चाहिए -

(1)'सम्पादक के नाम पत्र' को प्रकाशानार्थ किसी पत्र - पत्रिका के सम्पादक के पास सहपत्र (covering letter) से संलग्न कर भेजना चाहिए : जैसे - कागज के दायीं ओर सबसे ऊपर प्रेषक का पता एवं दिनांक लिखना चाहिए । उससे थोड़ा नीचे बायीं ओर सम्बन्धित पत्र या पत्रिका का नाम और पता लिखना चाहिए । इसी के नीचे 'महोदय' सम्बोधन के बाद कॉमा ;एद्ध लगाना चाहिए । इसके बाद नये अनुच्छेद से प्रकाशित होने वाले पत्र को प्रकाशित करने के लिए अनुरोध करना चाहिए । अन्त में समापन शब्द दायीं ओर लिखकर कॉमा (,) लगाना चाहिए और उसके नीचे हस्ताक्षर कर पता लिख देना चाहिए -

शंकर - भवन,
लंका, वाराणसी (उ.प्र.)
5-1-77

सेवा में,

सम्पादक,
दैनिक 'आज'

महोदय,

आपके दैनिक पत्र में 'जल - अपूर्ति' में अव्यवस्था पर अपने विचार प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ । आशा हैं, आप इन्हें प्रकाशित कर हमें अनुगृहीत करेंगे ।

भवदीय ;
रंजना बनर्जी

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 1 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 2 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
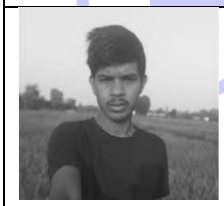	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

Call करें - 9887809083

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 6 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE